



# Ayur Pilocare



Ayurvedic  
Proprietary medicine

**Combo Pack :**  
**30 (500 mg) + 10 (500 mg) cap**

**M.R.P : 699**

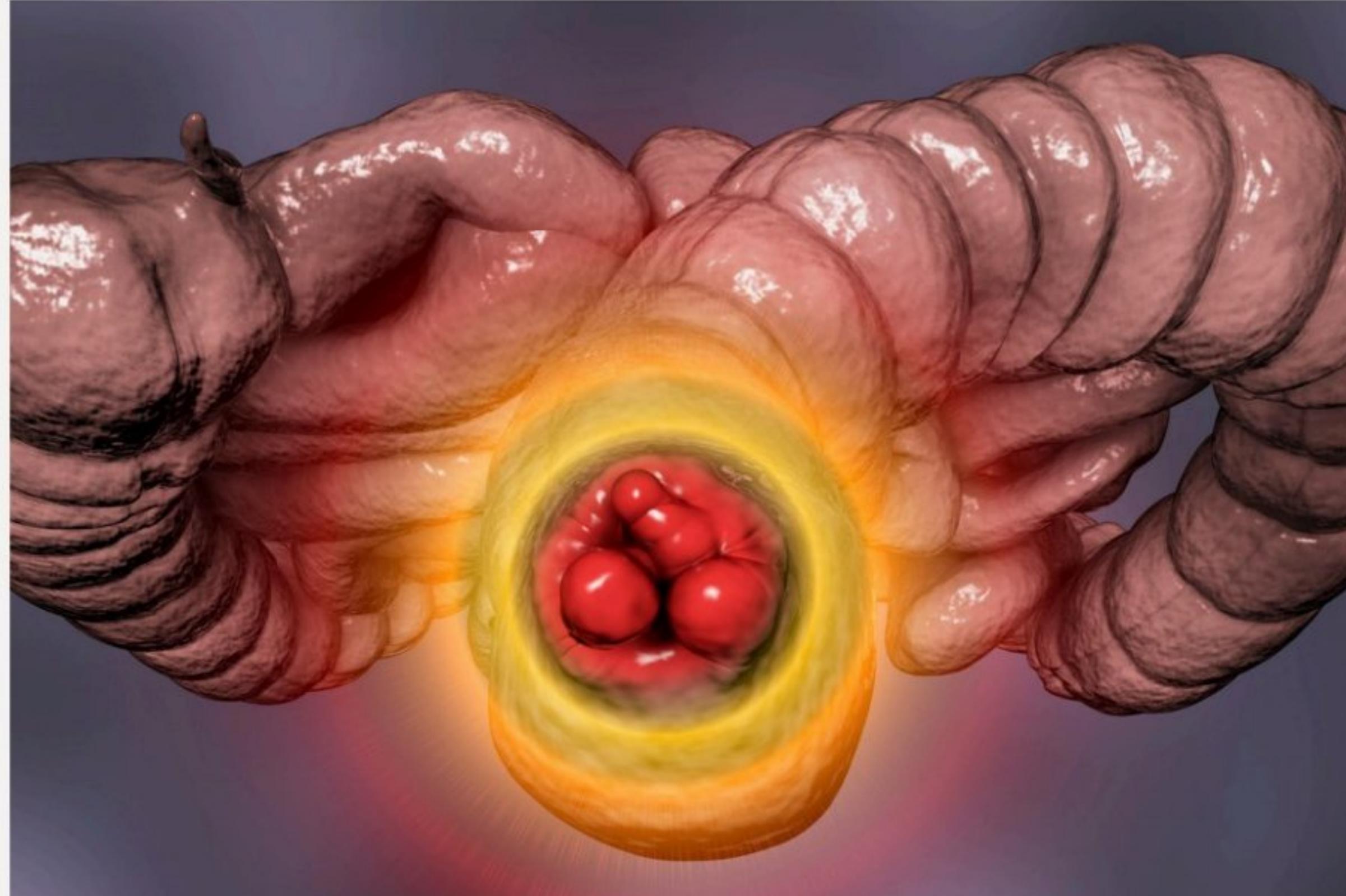
**Ayush, GMP,  
WHO  
certified**

Product by  
Rayhope Global



Rayhope Global Marketing Private Limited

**बवासीर** मलाशय और गुदा के निचले हिस्से में सूजी हुई नसें होती हैं । कभी-कभी, इन रक्त वाहिकाओं की दीवारें इतनी पतली हो जाती हैं कि नसें उभर जाती हैं और उनमें जलन होने लगती है, खासकर जब आप मलत्याग करते हैं । इन्हें पाइल्स भी कहते हैं ! ये किसी भी उम्र में हो सकता है लेकिन ज्यादातर **50** से अधिक उम्र के लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है



# बवासीर के प्रकार

## आंतरिक बवासीर

ये मलाशय के अंदर इतनी दूर तक होते हैं कि आमतौर पर इन्हें देख या महसूस नहीं कर सकते। वे आम तौर पर दर्द नहीं पहुंचाते क्योंकि इसके पास दर्द-संवेदन करने वाली कुछ ही तंत्रिकाएं होती हैं।

# बवासीर के प्रकार

## आंतरिक बवासीर

ये मलाशय के अंदर इतनी दूर तक होते हैं कि आमतौर पर इन्हें देख या महसूस नहीं कर सकते। वे आम तौर पर दर्द नहीं पहुंचाते क्योंकि इसके पास दर्द-संवेदन करने वाली कुछ ही तंत्रिकाएं होती हैं।

## बाहरी बवासीर

इसमें काफी दर्द होता है और ये गुदा के आसपास की त्वचा के नीचे मिलते हैं, जहां कई दर्द-संवेदनशील तंत्रिकाएं होती हैं।

## बाहर निकली हुई बवासीर

ऐसा तब होता है जब आंतरिक बवासीर इतनी नीचे तक फैल जाती है कि वह आपके गुदा द्वार के बाहर उभर आती है। वे आमतौर पर आपके शरीर के अंदर अपने आप वापस चले जाते हैं। भले ही वे ऐसा न करें, उन्हें अक्सर धीरे से वापस अपनी जगह पर धकेला जा सकता है।

## खूनी बवासीर

बवासीर उभरती हुई और सूजी हुई नसों के कारण आंतरिक या बाहरी गुदा में होती है। ब्लीडिंग बवासीर उन फूली हुई नसों के टूटने से होती है जो बार-बार मल त्याग करने या बैठते समय फट जाती है। इसमें मल त्याग के समय खून आसानी से आ सकता है

## बाहर निकली हुई बवासीर

ऐसा तब होता है जब आंतरिक बवासीर इतनी नीचे तक फैल जाती है कि वह आपके गुदा द्वार के बाहर उभर आती है। वे आमतौर पर आपके शरीर के अंदर अपने आप वापस चले जाते हैं। भले ही वे ऐसा न करें, उन्हें अक्सर धीरे से वापस अपनी जगह पर धकेला जा सकता है।

## खूनी बवासीर से बचने के लिए निम्नलिखित सावधानियां अपनानी चाहिए:

- प्रतिदिन पानी पिएं और हाइड्रेटेड रहें
- फाइबर युक्त आहार लें
- मल त्याग करते समय जोर न लगाएं
- नियमित व्यायाम करें
- लंबे समय तक बैठे न रहें

## बादी बवासीर

बादी बवासीर एक गंभीर मलाशय संबंधी समस्या होती है, जिसमें मलाशय की नसें सूज जाती हैं और मलाशय से बाहर लटकती हैं। अंग्रेजी में यह "**Grade 3 or Grade 4 hemorrhoids**" के रूप में भी जाना जाता है।



## बादी बवासीर

बादी बवासीर एक गंभीर मलाशय संबंधी समस्या होती है, जिसमें मलाशय की नसें सूज जाती हैं और मलाशय से बाहर लटकती हैं। अंग्रेजी में यह "**Grade 3 or Grade 4 hemorrhoids**" के रूप में भी जाना जाता है।

### बादी बवासीर के लक्षण क्या हैं?

बादी बवासीर के लक्षणों में खून आना, खुजली, सूजन और दर्द शामिल हैं। इसके साथ ही, मलत्याग के समय भी बादी बवासीर के रोगी को बहुत दर्द होता है और मलाशय में खुजली हो सकती है। इसके अलावा, बादी बवासीर के रोगी में उच्च रक्तचाप हो सकता है।



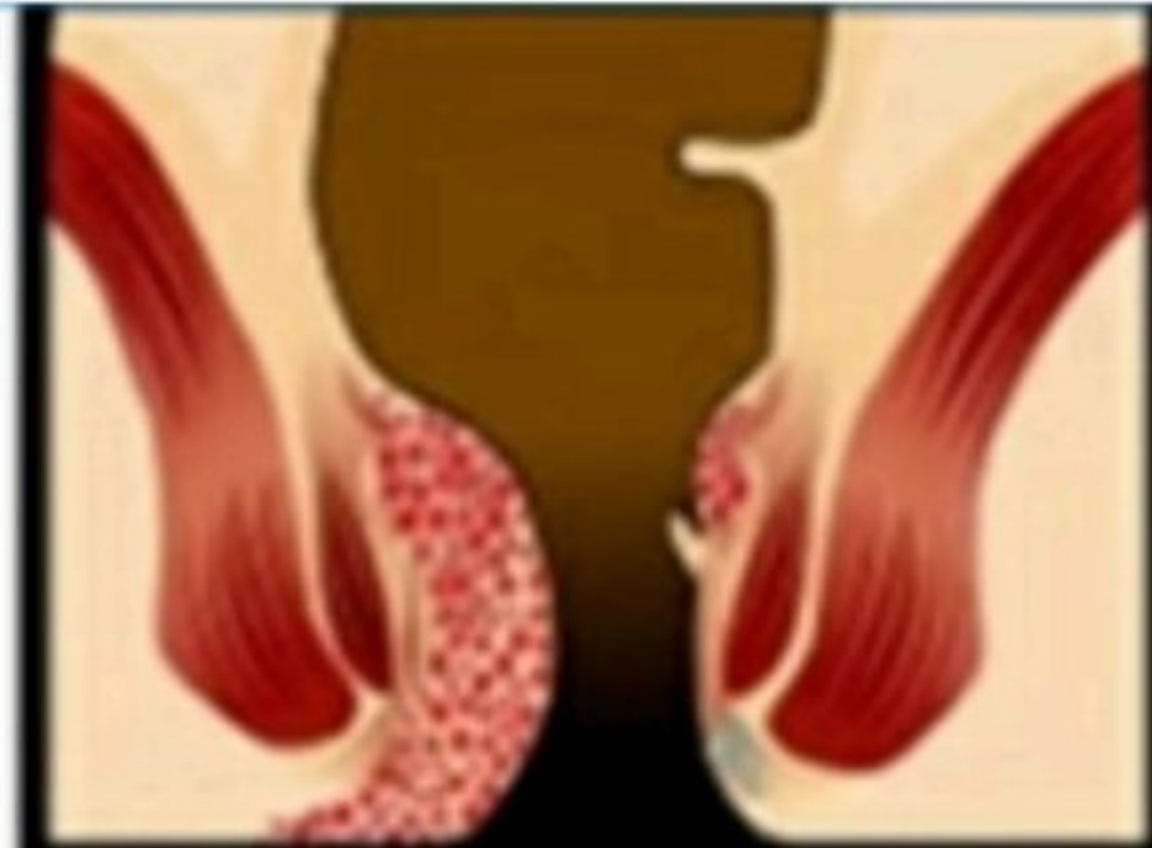
**Grade-i**



**Grade-ii**



**Grade-iii**



**Grade-iv**



**अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न -**

**बवासीर क्यों होता है?**

बवासीर कई कारणों से हो सकता है। कुछ मुख्य कारण में मल त्याग करते समय जोर लगाना, बैठने की लम्बी अवधि, कब्ज या दस्त का अधिक समय तक होना, ओबेसिटी, और गर्भावस्था शामिल है।

## अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न -

### बवासीर क्यों होता है?

बवासीर कई कारणों से हो सकता है। कुछ मुख्य कारण में मल त्याग करते समय जोर लगाना, बैठने की लम्बी अवधि, कब्ज या दस्त का अधिक समय तक होना, ओबेसिटी, और गर्भावस्था शामिल है।

### बवासीर की शुरुआत कैसे होती है?

बवासीर उस समय शुरू होता है जब गुदा और मलाशय क्षेत्र की नसें सूज और फूल जाती हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं। बवासीर की शुरुआती अवस्था में, लोगों को गुदा क्षेत्र में दर्द, खुजली और सूजन जैसे लक्षणों का सामना करना पड़ता है। कुछ मामलों में मल त्याग करते समय खून भी निकल सकता है।

## बवासीर में क्या खाना चाहिए?

बवासीर के मरीज को आहार में फाइबर से भरपूर फल और सब्जी जैसे कि गाजर, सेब, पपीता, अनार, कद्दू, गोभी, बैंगन, गोभी आदि, दालें और अन्य खाद्य पदार्थ, अधिक पानी पीना, नारियल पानी, आदि लेने की सलाह दी जाती है।

## **बवासीर में क्या खाना चाहिए?**

बवासीर के मरीज को आहार में फाइबर से भरपूर फल और सब्जी जैसे कि गाजर, सेब, पपीता, अनार, कद्दू, गोभी, बैंगन, गोभी आदि, दालें और अन्य खाद्य पदार्थ, अधिक पानी पीना, नारियल पानी, आदि लेने की सलाह दी जाती है।

## **बवासीर होने पर क्या नहीं खाना चाहिए?**

बवासीर के मरीज को अपने आहार में कुछ खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए। कुछ ऐसे खाद्य पदार्थों की सूची में तले हुए और मसालेदार खाद्य पदार्थ, तीखे और तले हुए नमकीन स्नैक्स, तली हुई चीजें, मिर्च-मसाला वाले खाद्य पदार्थ, आदि शामिल हैं।

## बवासीर के लक्षण

- बवासीर दर्द या असहजता का कारण बन सकते हैं, खासकर अगर वे बाहरी हों। यह दर्द गुदामार्ग से गुजरते समय या लम्बे समय तक बैठे रहने के दौरान ज्यादा बढ़ सकता है।
- बवासीर गुदा क्षेत्र में खुजली का कारण बन सकता है, जो स्थायी हो सकती है और राहत पाने में मुश्किल हो सकती है।
- मल त्याग करने के दौरान या बाद में खून बह सकते हैं।
- गुदामार्ग के आसपास एक गांठ या सूजन महसूस की जा सकती है। यह मल त्याग करने के बाद पोंछाई करने पर अधिक नोटिस की जा सकती है।

## बवासीर के मुख्य कारण हैं

- मल त्याग करते समय अत्यधिक जोर लगाना
- अस्थायी जीवनशैली
- आहार में फाइबर की कमी
- अत्यधिक मसालेदार भोजन करना
- पोषण की कमी
- मोटापा
- गर्भावस्था





**आइये , अब हम आपको  
इन सब परेशानियों का एक  
उचित उपाय बताते हैं**





# Ayur Pilocare



Ayurvedic  
Proprietary medicine

Combo pack :  
30 (500 mg) + 10 (500 mg) capsules

M.R.P : 699

Ayush, GMP,  
WHO  
certified

Product by  
Rayhope Global



Rayhope Global Marketing Private Limited



# Contents



## 30 capsule pack

- Sankh Bhasm
- Loh Bhasm
- Neem seed
- Kala Dana
- Harad
- Saunth
- Daru Haldi
- Kachur

## 10 capsule pack

- Aranda seeds
- Shudh Jamalgota
- Snaya
- Trivrit
- Shunthi
- Mirch
- Pipla
- Harad





**आइए , अयूर पाइलोकेयर की प्रत्येक महत्वपूर्ण सामग्री के बारे में जानना शुरू करें**



## **Shankha bhasma**

**50 MG**

- **पेट दर्द का इलाज**
- **हड्डी के स्वास्थ्य में सुधार**
- **यह अमाशय को संतुलित करने में मदद करता है**
- **आंतों में शांति प्रदान करता है।**
- **यह पाइल्स के लक्षणों को कम करता है और उन्हें नियंत्रित करने में सहायक होता है**

लोह भस्म एक प्राचीन आयुर्वेदिक औषधि है जिसमें लोह (आयरन) को प्राकृतिक रूप से इकठा किया जाता है। यह बवासीर (पाइल्स) के इलाज में उपयोगी होता है क्योंकि इसमें शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले कई गुण होते हैं।



## Loh bhasma

50 MG



- लोह भस्म में आयरन की उच्च मात्रा होती है, जो हेमोग्लोबिन की स्तर को बढ़ा सकती है और अनीमिया को दूर कर सकती है, जो कई बार बवासीर के साथ जुड़ी समस्याओं का कारण बनती है।
- लोह भस्म का सेवन रक्त संचरण को बढ़ा सकता है, जो बवासीर के इलाज में मदद करता है।
- लोह भस्म में विशेष एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो बवासीर के दर्द और सूजन को कम करते हैं।
- लोह भस्म में पाचन संशोधन गुण होते हैं, जो कब्ज और अन्य पाचन संबंधी समस्याओं को ठीक करने में मदद करते हैं।
- लोह भस्म में विटामिन सी के साथ मिश्रित होता है, जो शरीर की प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है और संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में मदद करता है।



## **Neem beej**

**100 MG**

- नीम में एंटी बैक्टीरियल, सूजनरोधी, और दर्द निवारक गुण होता है जो बवासीर के मस्सों के सूजन को कम करता है और बैक्टीरिया का अंत करके दर्द को दूर करता है।
- सूजन, जलन, खुजली और इन्फेक्शन कम करता है।
- पाचन दुरुस्त करके कब्ज से छुटकारा दिलाता है



## **Kala dana**

**50 MG**

**काला दाना जिसे संस्कृत में कृष्ण बीज, और अंग्रेजी में "Black Seed" या "Black Cumin Seed" कहा जाता है,**

- कृष्ण बीज में मौजूद एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण बवासीर के दर्द और सूजन को कम करते हैं।
- यह मधुमेह, हृदय रोग, और कैंसर जैसी बीमारियों के खिलाफ लड़ने में मदद करते हैं,
- कृष्ण बीज में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल गुण रक्तास्राव को नियंत्रित करके बवासीर के मरीजों को संक्रमण से बचाने में मदद करते हैं।
- कृष्ण बीज का सेवन पाचन को सुधारता है और पेट के रोगों को कम करता है, जो बवासीर के मरीजों को लाभप्रद होता है।





# Saunth

50 MG

- सूखी अदरक को सोंठ कहते हैं. सोंठ में आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फाइबर, सोडियम, विटामिन ए और सी, जिंक, फोलेट एसिड, फैटी एसिड के गुण पाए जाते हैं.
- सोंठ में मौजूद एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण बवासीर के दर्द और सूजन को कम करने में मदद करते हैं।
- सोंठ में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट्स और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण सूजन को कम करने में सहायक होते हैं, जो बवासीर के लक्षणों को आराम प्रदान करता है।
- बवासीर के दर्द और अन्य लक्षणों को कम कर सकता है।
- ये मधुमेह, अपच, और भोजन स्वरूप में आने वाले अन्य पाचन सम्बंधी रोगों को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।





# Harad

50 MG



हरड़, जिसे हरीतकी भी कहा जाता है, एक प्रसिद्ध जड़ी-बूटी है। यह त्रिफला में पाए जाने वाले तीन फलों में से एक है

- हरड़ में विशेष गुण होते हैं जो आंत्र को शांति प्रदान करते हैं, जिससे बवासीर के दर्द और अन्य लक्षण कम हो सकते हैं।
- हरड़ में उपस्थित रसायनिक तत्व कब्ज को दूर करने में मदद कर सकते हैं, जो बवासीर की स्थिति को और भी खराब कर सकती है।
- हरड़ में विशेष एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो बवासीर के सूजन और दर्द को कम करते हैं।
- हरड़ में पाचन संबंधी लाभकारी तत्व होते हैं जो पाचन संबंधी समस्याओं को ठीक करते हैं,
- हरड़ का सेवन रक्त संचरण को बढ़ा सकता है, जो बवासीर के इलाज में मदद करता है।



source- healthunbox.com

# Daru Haridra

50 MG



दारुहरिद्रा को दारु हल्दी भी कहा जाता है। इसे अंग्रेजी में इण्डियन बर्बेरी कहा जाता है। दारुहरिद्रा नेपाल, श्रीलंका जैसे हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाता है।

- दारुहल्दी में प्राकृतिक एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो बवासीर के दर्द और सूजन को कम करते हैं।
- दारुहल्दी के उपयोग से आंत्र को शांति मिलती है, जिससे बवासीर के लक्षणों में राहत मिलती है।
- दारुहल्दी खून की संचरण को बढ़ा सकती है, जो बवासीर के इलाज में मदद कर सकता है और बवासीर के कारण होने वाले दर्द को कम करता है।
- दारुहल्दी पाचन संबंधी समस्याओं को ठीक करने में मदद करती है।
- दारुहल्दी में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो बवासीर के कारण होने वाली संक्रमण को कम कर सकते हैं और संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में मदद कर सकते हैं।

यह हल्दी की जाति की वनस्पति होती है। इसके पत्ते हल्दी के समान होते हैं तथा इसकी जड़ों में हल्दी की तरह गांठें होती हैं।



## Kachur

50 MG

- कचूर में पाये जाने वाले गुण आंतिक प्रक्रिया को संतुलित करने में मदद करते हैं, जिससे बवासीर की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।
- कचूर में मौजूद एंटी-इन्फ्लेमेटरी (सूजन कम करने वाले) गुण बवासीर में होने वाली सूजन को कम करते हैं।
- कचूर में अनेस्थेटिक (दर्द को कम करने वाले) गुण होते हैं, जो बवासीर के दर्द को कम करने में मदद करते हैं।
- कचूर के उपयोग से पाचन प्रक्रिया को सुधारा जा सकता है, जो बवासीर की समस्या में सहायक होता है।



# Arandi seeds

100 MG



अरंडी बीजों को आमतौर पर कैस्टर ओयल बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है, लेकिन इसके बीजों में कई स्वास्थ्य लाभकारी गुण भी होते हैं जो बवासीर में उपयोगी हो सकते हैं।

- अरंडी के बीजों में पेट साफ़ करने वाले गुण होते हैं, जो बवासीर के इलाज में मददगार होते हैं।
- अरंडी के बीज उच्च मात्रा में प्रोटीन और ताजे तेलों का स्रोत होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है।
- अरंडी के बीजों में पाचन प्रक्रिया को सहायक और आंतिक असमर्थता को दूर करने में मदद करने वाले गुण होते हैं।
- अरंडी के बीज उच्च फाइबर स्रोत होते हैं, जो पाचन को बेहतर बनाए रखने में मदद कर सकते हैं और बवासीर की समस्या को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।
- अरंडी के बीजों का सेवन किया जा सकता है ताकि आंतों को लुब्रिकेट किया जा सके, जिससे बवासीर की समस्या में राहत मिल सकती है।

## इसकी पत्तियाँ और दाने पाचन तंत्र को साफ करने के लिए प्रयोग की जाती हैं।



### **Snay patti**

**100 MG**

- सनाय पत्ती का उपयोग कब्ज के इलाज में किया जाता है, जो बवासीर के मुख्य कारणों में से एक है। इसके पत्तों या उसके पाउडर को सेवन करने से पेट संबंधी समस्याएं ठीक हो सकती हैं, जिससे बवासीर की समस्या कम हो सकती है।
- सनाय पत्ती में मौजूद एंथ्रोकिनोन नामक गुण पेट के साफ होने में मदद करता है, जो कब्ज को दूर करता है और पाइल्स के लक्षणों को कम करता है।
- यह पेट के अपच को दूर करती है और पाइल्स के दर्द और सूजन को कम करने में मदद करती है।



# Trivrit

50 MG

त्रिवृत एक प्राचीन आयुर्वेदिक औषधि है जिसे विभिन्न पाचन और शोथ विकारों के इलाज में प्रयोग किया जाता है।

- विषैले अवसाद को हटाने में मदद कर सकते हैं जो बवासीर के लक्षणों में शामिल होते हैं।
- एंथ्राकोइनोन (**Anthracoionon**) और डिग्लुकोसाइड (**Diglucoiside**) जैसे संघटक पाये जाते हैं, जो सूजन को कम करने में मदद करते हैं।
- कब्ज को दूर करने और पेट को साफ करने में मदद करता है, जो बवासीर के उपचार में महत्वपूर्ण होता है।
- एंथ्राकोइनोन (**Anthracoionon**) के कारण, बवासीर के दर्द को कम करने में मदद कर सकता है।



# Shunthi

50 MG

शुंठी उन अदरक के खंडों को कहते हैं जिन्हें सूखाया जाता है और फिर पाउडर बनाया जाता है जबकि सौंठ उन अदरक के खंडों को कहते हैं जो सुंघा जाता है और फिर सूखाया जाता है।

- कब्ज के लक्षणों को कम करता है और बवासीर के इलाज में मदद करता है।
- शुंठी में उपस्थित एंटी-इन्फ्लामेटरी प्रोपर्टीज के कारण, इसका सेवन बवासीर के दर्द और सूजन को कम करने में मदद करता है।
- शुंठी में उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट्स के कारण, यह आंतों को सुरक्षित रख सकता है और बवासीर के जैसी समस्याओं को प्रभावित करने वाले कई नकारात्मक प्रभावों से बचाव करता है।
- पेट की गर्मी को कम करता है, जिससे बवासीर के लक्षणों को कम किया जा सकता है।





# Pippli

40 MG

- यह बवासीर की सूजन और दर्द को कम करने में मदद करती है।
- पाचन शक्ति को सुधार सकता है और कब्ज को दूर करके बवासीर के लक्षणों को कम करता है।
- रक्त संचरण को बढ़ाता है, जिससे बवासीर के लक्षणों को कम किया जा सकता है।



**shudh  
jamalgota**

**50 MG**

- ये कब्ज से आराम दिलाता है
- इसके अंदर एंटीबायोटिक गुण पाए जाते हैं
- सूजन से आराम दिलाता है

# ऐसी स्थिति में अयूर पाइलोकेयर का इस्तेमाल बिना डॉक्टर से पूछे नहीं करना चाहिए

- गर्भावस्था की अवधि के दौरान
- गंभीर गुर्दे की समस्या के दौरान
- लीवर की गंभीर समस्या के दौरान



# ऐसी स्थिति में अयूर पाइलोकेयर का इस्तेमाल कर सकते हैं

- आंतरिक बवासीर
- खुनी बवासीर
- गंभीर कब्ज
- पेट का दर्द
- हीमोग्लोबिन की समस्या
- पाचन सम्बन्धी समस्या
- रोग प्रतिरोधक की समस्या

Product by  
Rayhope Global

**30 + 10 cap**

**M.R.P : 699**



**Ayurvedic  
Proprietary medicine**

**Ayush, GMP,  
WHO  
Certified**



Rayhope Global Marketing Private Limited

# Ayur Pilocare



Product by  
Rayhope Global

**Ayush, GMP,  
and  
WHO certified**

**Ayurvedic  
Proprietary medicine**

## **Dose for 30 capsule**

सुबह और शाम एक कैप्सूल गर्म  
पानी के साथ

## **Dose for 10 capsule**

रात को सोने से पहले एक कैप्सूल  
दूध या गर्म पानी के साथ



# Ayur Pilocare



Ayurvedic  
Proprietary medicine

Combo Pack :  
30 (500 mg)+ 10 (500 mg) cap

M.R.P : 699

Ayush, GMP,  
WHO  
Certified

Product by  
Rayhope Global



Rayhope Global Marketing Private Limited